21064

B. A. (Final Year) Examination, 2021

(New Course)

HINDI LITERATURE

Paper : Third

(Hindi Natak, Nibandh Tatha Sphut Gadya Vidhayen evam Baghele Bhasha)

Time Allowed : Three hours

Maximum Marks : 60

नोट : प्रत्येक खण्ड से प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

खण्ड-'अ'

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के सही विकल्प लिखिए— 5×1=5

(i) 'अन्धेर नगरी' नाटक के लेखक हैं—

(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) प्रेमचन्द (द) जैनेन्द्र कुमार

(ii) 'ध्रुव स्वामिनी' नाटक के प्रधान नायक का नाम है—

(अ) रामगुप्त (ब) चन्द्रगुप्त

(स) समुद्रगुप्त (द) कृष्णगुप्त

(iii) 'करुणा' का विपरीत क्या है?

(अ) दया (ब) आनन्द

(स) क्रोध (द) दुःख

(iv) बघेली के समर्थ एवं प्राणवान कवि हैं—

(अ) बैजनाथ पाण्डेय 'बैजू' (ब) सैफू

(स) कालिका प्रसाद त्रिपाठी (द) शम्भु काकू

(v) कोलो की उत्सव भूमि कौन-सी है?

(अ) सतना (ब) छतरपुर

(स) रीवा (द) भोपाल

खण्ड-'ब'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए— 3×5=15

(i) 'दीपदान' एकांकी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

(ii) 'वापसी' एकांकी का उद्देश्य बतलाइए।

(iii) 'आत्मकथा' से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

(iv) 'करुणा' निबन्ध की विशेषताएँ बताइए।

(v) बघेली भाषा किन-किन जगहों में बोली जाती है?

(vi) लक्ष्मी नारायण मिश्रा के व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डालिए।

(vii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विषय में आप क्या जानते हैं? बतलाइए।

(viii) शरद जी के समाज में व्याप्त बेरोजगारी के प्रति क्या विचार है? लिखिए।

खण्ड-'स'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए— 2×10=20

(i) 'अन्धेर नगरी' नाटक की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

सिद्ध कीजिए कि ध्रुवस्वामिनी नायिका प्रधान नाटक है।

(ii) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

बघेलखण्ड का नाम बघेलखण्ड क्यों पड़ा? वहाँ की वैभव एवं संस्कृति पर प्रकाश डालिए।

4. निम्न में से किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए— 1×10=10

(i) भारत केर माटी

(ii) शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन का महत्त्व

(iii) सरल दृश्य

(iv) सैफू के काव्य में जीवन्तता एवं लोकप्रियता

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— 1×10=10

(अ) गुरुजी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या? पर अपना क्या? अपने किसी राजकाज में थोडें हैं कि, कुछ डर है, रोज मिठाई चाभना, मजे में आनन्द से राजभजन करना।

(ब) ''हृदय को संभाल। कष्ट सहन करने के लिए प्रस्तुत हो जा। प्रतारणा में बड़ा मोह होता है। उसे छोड़ने को मन नहीं करता। कोमा! छल का बहिरंग सुन्दर होता है। विनीत और आकर्षक भी; पर दुखदायी और हृदय को बेधने के लिए इस बन्धन को तोड़ डाल।''

(स) चारि महीना बरदा मारेन, जोति जोति के डॉडी।
सोचेन आसउँ कोदउ बोउब, होइ चारि छ खाँड़ी॥
टोरबा, मिला जोटइया एकठे, ढूँढेन नगरा चउँही।
बोइ बराहि सियारी रीतेन, मूड़े परी निरउँही॥